अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

अपठित गद्यांश - परिचय

अपठित का अर्थ होता है 'जो पढ़ा नहीं गया हो'। यह किसी पाठ्यक्रम की पुस्तक में से नहीं लिया जाता है। यह कला, विज्ञान, राजनीति, साहित्य या अर्थशास्त्र, किसी भी विषय का हो सकता है। इनसे सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं। इससे छात्रों का मानसिक व्यायाम होता है और उनका सामान्य ज्ञान भी बढ़ता है। इससे छात्रों की व्यक्तिगत योग्यता व अभिव्यक्ति की क्षमता बढ़ती है।

विधि

अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों को हल करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

1. दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़ना चाहिए।

2. गद्यांश पढ़ते समय मुख्य बातों को रेखांकित कर देना चाहिए।

3. गद्यांश के प्रश्नों के उत्तर देते समय भाषा एकदम सरल होनी चाहिए।

4. उत्तर सरल व संक्षिप्त व सहज होने चाहिए। अपनी भाषा में उत्तर देना चाहिए।

5. प्रश्नों के उत्तर कम-से-कम शब्दों में देने चाहिए, साथ हीं गद्यांश में से हीं उत्तर छाँटने चाहिए।

6. उत्तर में जितना पूछा जाए केवल उतना हीं लिखना चाहिए, उससे ज़्यादा या कम तथा अनावश्यक नहीं होना चाहिए। अर्थात, उत्तर प्रसंग के अनुसार होना चाहिए।

7. यदि गद्यांश का शीर्षक पूछा जाए तो शीर्षक गद्यांश के शुरु या अंत में छिपा रहता है।

8. मूलभाव के आधार पर शीर्षक लिखना चाहिए।

अपठित पद्यांश - परिचय

अपठित पद्यांश का अर्थ है 'वह कविता का अंश या कविता जो पहले पढ़ी न गई हो'। अपठित पद्यांश में किसी कविता का एक अंश दिया जाता है तथा उस पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। यह कविता किसी (अर्थात उसी कक्षा के) पाठ्यक्रम की पुस्तक में से नहीं दी जाती है। इसे पढ़कर इससे सम्बन्धित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। इससे छात्रों की कविता पढ़ने और समझने की क्षमता का विकास होता है।

विधि

इनको हल करते समय निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना अनिवार्य है।

1. कविता को दो-तीन बार पढ़ना चाहिए, जिससे उसका भाव और अर्थ अच्छी तरह समझ में आ जाए।

2. कविता को समझकर उत्तर देने चाहिए।

3. प्रश्नों के उत्तर कविता की लाइनों में नहीं देने चाहिए, बल्कि अपने शब्दों में गद्य में देने चाहिए।

4. उत्तर सरल, स्पष्ट और कम शब्दों का प्रयोग करके भावों के साथ व्यक्त करना चाहिए।

अपठित गद्यांश 1

जब पुरातन जीव-जंतुओं तथा नगरों के अवशेष खोदकर बाहर निकाले जाते हैं तो हमें प्राचीन इतिहास की विशेष जानकारी मिलने लगती है और भूतकाल के विषय में हमारा ज्ञान भी प्रत्यक्ष रुप से बढ़ जाता है। बहुत पहले विश्वभर में जो जीव-जंतु विचरण किया करते थे, उनमें से कुछ अब पूर्ण रुप से समाप्त हो चुके हैं। किंतु कभी-कभी अन्वेषी वैज्ञानिक द्वारा उन प्राणियों की अस्थियाँ पृथ्वी पर खोज ली जाती हैं।

इन अस्थियों के आधार पर वह उस जीव-जंतु विशेष का ढाँचा पुन:निर्मित करने में सफल होता हैं और इस ढाँचे द्वारा वह उसके आकार-प्रकार का बहुत कुछ सही-सही अनुमान लगा सकते हैं। यदि कोई मनुष्य किसी दिन अपने कार्य के लिए प्रस्थान करते समय किसी ऐसे प्रागैतिहासिक प्राणी का दर्शन कर ले तो उसे संभवत: अपने जीवन के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आश्चर्य का अनुभव होगा। उन प्राणियों में एकाधिक प्रकार के 'डायनोसॉर्स' थे जिनकी अस्थियाँ यूरोप तथा अमेरिका दोनों स्थानों पर प्राप्त हुई हैं।

उनमें से कुछ तो चार पैरों पर चलते थे, किंतु कुछ अन्य अंशत: सीधे खड़े होकर पक्षी की भाँति अपने पिछले पैरों पर चलते थे। किंतु आकार-प्रकार में उनकी तुलना एक पक्षी के साथ नहीं की जा सकती थी। 'डायनोसॉर्स' उन पशुओं में सबसे बड़े थे जो कभी इस पृथ्वी की सतह पर चलते-फिरते थे। उनमें से कुछ 12 फीट ऊँचे थे, कुछ 60 फीट लंबे थे, कुछ 80 फीट लंबे थे। 80 फीट लंबे! यह लंबाई, समझ लीजिए कि 6 या 7 बड़ी मोटरकारों की लंबाई होगी⁻एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक।

उनमें से एक के पिछले पैर की ऊपरी अस्थि किसी ऊँचे मनुष्य के आकार के बराबर थी⁻6 फीट 2 इंच लंबी। एक अन्य प्राणी की कल्पना कीजिए जिसका सिर किसी कक्ष के प्रवेश द्वार के बराबर था⁻लंबाई में 8 फीट, और जिसके ऊपर तीन नुकीली अस्थियों के स्थान बने हुए थे अथवा एक ऐसे प्राणी की कल्पना कीजिए जिसकी पीठ पर किनारे-किनारे नुकीली पट्टियाँ चिपकी हुई हों, ये पट्टियाँ संभवत: उन जीव-जंतुओं के आक्रमण से बचाने के लिए थी, जो उसका भक्षण करना चाहते थे।

इतिहास के किसी युग में ये 'डायनोसॉर्स' विश्व के अधिपति थे, सारी पृथ्वी के स्वामी थे। अब उनका कोई अस्तित्व नहीं रहा। उनके विषय में हमारा ज्ञान पूर्ण रुप से उन अस्थियों पर आधारित है जो धरती के भीतर यत्र-तत्र गड़ी हुई लुप्तप्राय स्थिति में मिलती हैं।

प्रश्न:1 इतिहास का अध्ययन करने के लिए कौन सी पद्धति श्रेष्ठ मानी जाती है?

(क) पुराने अवशेषों के द्वारा जानकारी प्राप्त करने की पद्धति

(ख) चलते-फिरते प्राणियों को देखकर जानने की पद्धति

उत्तर: (क) पुराने अवशेषों के द्वारा जानकारी प्राप्त करने की पद्धति

प्रश्न:2 डायनोसॉर्स के विषय में कौन सा तथ्य आपको सबसे ज्यादा उत्तेजक लगता है?

(क) उनकी पीठ पर बनी नुकीली अस्थियाँ

(ख) इनका विशेष ढाँचा

(ग) 80 फीट लम्बाई और बड़ा होना

(घ) इनमें कुछ चार पैरों पर और कुछ दो पैरों पर चलते थे

उत्तर: (ग) 80 फीट लम्बाई और बड़ा होना

प्रश्न:3 लुप्तप्राय जीव-जन्तुओं की अस्थियों से वैज्ञानिक कौन सी सूचना लेते हैं?

(क) उनके आकार-प्रकार का पता लगाना

(ख) प्रागैतिहासिक प्राणी का दर्शन करना

उत्तर: (क) उनके आकार-प्रकार का पता लगाना

प्रश्न:4 डायनोसॉर्स की पीठ पर चिपकी नूकीली पट्टियों के विष्य में लेखक ने क्या अनुमान किया है?

(क) यह जीव-जन्तुओं के आक्रमण से बचाने के लिए थे

(ख) यह उनकी सुन्दरता बढ़ाने के लिए थे

उत्तर: (क) यह जीव-जन्तुओं के आक्रमण से बचाने के लिए थे

प्रश्न:5 गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए।

(क) पुरातन जीव-जंतु

(ख) डायनोसॉर्स

(ग) प्रागैतिहासिक प्राणी

(घ) पृथ्वी के स्वामी

उत्तर: (ख) डायनोसॉर्स

अपठित गद्यांश 2

युवा को यह सदा स्मरण होना चाहिए कि वह बहुत कम बातें जानता है। अपने हीं आदर्श से वह बहुत नीचे है और उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने बड़ों का सम्मान करे, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे। यह बातें आत्ममर्यादा के लिए आवश्यक हैं।

यह सारा संसार, जो कुछ हम हैं और जो कुछ हमारा है—हमारा शरीर, हमारी आत्मा, हमारे कर्म, हमारे भोग, हमारे घर की और बाहर की दशा, हमारे बहुत-से अवगुण और थोड़े गुण—सब इसी बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए। दब्बूपन कायरता है। इसमें व्यक्ति दूसरों की कृपा पाने की इच्छा रखता है, जिससे उसमें आत्मविश्वास की कमी होती है।

इरादे कमज़ोर हो जाते हैं। नम्रता से मेरा अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है, जिसके कारण मनुष्य दूसरों का मुँह ताकता है, जिससे उसका संकल्प क्षीण और उसकी प्रज्ञा मंद हो जाती है, जिसके कारण आगे बढ़ने के समय भी पीछे रहता है और अवसर पड़ने पर चटपट किसी बात का निर्ण्य नहीं कर सकता है। मनुष्य का बेड़ा अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर ले जाए। सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में, प्रत्येक स्थिति के बीच, अपनी राह आप निकालती है।

जीवन के फैसले मनुष्य को स्वयं करने होते हैं। इसलिए आदमी को आत्मनिर्भर होना चाहिए। अब तुम्हें क्या करना चाहिए, इसका ठीक-ठीक उत्तर तुम्हीं को देना होगा, दुसरा कोई नहीं दे सकता। कैसा भी विश्वास-पात्र मित्र हो, तुम्हारे इस काम को वह अपने ऊपर नहीं ले सकता। हम अनुभवी लोगों की बातों को आदर के साथ सुनें, बुद्धिमानों की सलाह को कृतज्ञतापूर्वक मानें, पर इस बात को निश्चित समझकर कि हमारे कामों से ही हमारी रक्षा व हमारा पतन होगा, हमें अपने विचार और निर्णय की स्वतंत्रता को दृढ़तापूर्वक बनाए रखना चाहिए।

जिस पुरुष की दृष्टि सदा नीची रहती है, उसका सिर कभी ऊपर न होगा। नीची दृष्टि रखने से यद्यपि आँखें रास्ते पर रहेंगी पर इस बात को न देखेंगी कि यह रास्ता कहाँ ले जाता है। अपने व्यवहार को मृदुल बनाए रखो। कठोरता, उदंडता और अक्खड़पन कतई नहीं हो। अपने व्यवहार में कोमल रहो और अपने उद्देश्यों को उच्च रखो, इस प्रकार नम्र और उच्चाशय दोनों बनो।

अपने मन को कभी मरा हुआ न रखो। मनुष्य अपना लक्ष्य जितना हीं उपर रखता है, उतना हीं उसका तीर ऊपर जाता है। लक्ष्य जितना ऊँचा होगा, सफलता भी उतनी ही अधिक प्राप्त होगी।

प्रश्न:1 युवा को क्या स्मरण रखना चाहिए?

(क) ज्ञान, आदर्श और योग्यता की कमी

(ख) बुद्धि, व्यवहार और उद्देश्यों की कमी

उत्तर: (क) ज्ञान, आदर्श और योग्यता की कमी

प्रश्न:2 आत्ममर्यादा के लिए क्या आवश्यक है?

(क) नर्म स्वभाव, चटपट निर्णय लेना

(ख) बड़ों का सम्मान, छोटों से कोमल व्यवहार

उत्तर: (ख) बड़ों का सम्मान, छोटों से कोमल व्यवहार

प्रश्न:3 गद्यांश में से वह शब्द छाँटिए जिसका अर्थ 'बुद्धि' है।

(क) क्षीण

(ख) बुद्धि

(ग) ज्ञान

(घ) प्रज्ञा

उत्तर: (घ) प्रज्ञा

प्रश्न:4 गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(क) आत्ममर्यादा

(ख) युवावर्ग

(ग) अपना लक्ष्य

(घ) सद्यवहार

उत्तर: (घ) सद्यवहार

प्रश्न:5 चित्त की स्वतंत्रता हमें क्या बनाती है?

(क) चित्त की स्वतंत्रता हमें कठोर बनाती हैं

(ख) चित्त की स्वतंत्रता हमें नम्र तथा उच्चाशय बनाती है

उत्तर: (ख) चित्त की स्वतंत्रता हमें नम्र तथा उच्चाशय बनाती है

अपठित गद्यांश 3

मैं इस निर्णय पर पहुँच चुका हूँ कि उस आदमी से समूची मनुष्य जाति की तरफ़ से प्रार्थना करूँ कि वह यह वसीयत करे कि मेरी लाश जलाई न जाए, बल्कि मेडिकल इंस्टीट्यूट को अध्ययन के लिए दे दी जाए।

पूरी बात पढ़ लेने के बाद आप भी इसी निर्णय पर पहुँचेंगे।

एक जगह चार-पाँच आदमी बैठे हैं। बात उसी आदमी की हो रही है। उसकी गिनती शहर के खास लख़पतियों में है।

पहला कहता है, 'शहर में किसी को यह गौरव हासिल नहीं है कि उसे उस आदमी ने चाय पिलाई हो, पर मैं उसकी चाय पी चुका हूँ।'

सब भौचक्के रह जाते हैं। कहते हैं, 'असंभव! ऐसा हो हीं नहीं सकता। उस आदमी ने किसी को धूल का एक कण भी नहीं खिलाया।'

पहला कहता है, 'पर यह सच है। उसने प्रसन्नता से मुझे चाय पिलाई।' हुआ यह कि मैं उसके भाई की मृत्यु पर शोक प्रकट करने पहुँचा। तुम लोग जानते हीं हो, प्रॉपर्टी को लेकर इसके भाई से मुकदमा चल रहा था। इस बीच भाई की मृत्यु हो गई और प्रॉपर्टी इसे मिल गई। मैंने सोचा, आखिर भाई था। इसे दुख तो हुआ हीं होगा। मैं फाटक में घुसा तो उसने पूछा—'कैसे आए?' मैंने उदास होकर कहा—'आपके भाई की मृत्यु हो गई, ऐसा सुना है।

' वह बोल पड़ा—'अगर उसकी मौत पर दुख प्रकट करने आए हो तो फाटक के बाहर हो जाओ, पर तुम्हें दुख नहीं है तो मैं चाय पिला सकता हूँ।' मैंने कहा—'अगर आपको दुख नहीं है, तो मुझे दुख मनाने की क्या पड़ी है। चलो, चाय पिलाओ।' कुत्ते भी रोटी के लिए झगड़ते हैं, पर एक के मुँह में रोटी पहुँच जाए तो झगड़ा खत्म हो जाता है। आदमी में ऐसा नहीं होता। प्रेम से चाय पिलाई जाती है तो नफ़रत के कारण भी। घृणा भी आदमी को उदार बना देती है।

मैंने पाँचों की बातें सुनीं और मुझे लगा कि वह आदमी मनुष्य जाति की अमूल्य निधि है। उसकी बनावट पर शोध होना हीं चाहिए।

मनोविज्ञान-विशेषज्ञ इसके दिमाग का अध्ययन करें। मानव-विज्ञान वाले जाँच करें कि वह किन जीवन मूल्यों को मानता है? यह भी शोध का विषय है कि पत्नी से उसके संबंध किस प्रकार के हैं?

इसीलिए मैं उससे विनती करनेवाला हूँ कि तू अपनी लाश मेडिकल इंस्टीट्यूट को देकर मरना। मनुष्य जाति के लिए जो तू जीवित अवस्था में नहीं कर सका, वह तेरी लाश कर देगी। बहुत लोगों की लाशें ज़्यादा उपयोगी होती हैं। कई लोगों को देखकर लगता है, ये अगर जल्दी लाश हो जाएँ तो दुनिया का कितना भला कर जाएँ।

प्रश्न:1 गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

(क) केवल आदमी

(ख) मैं

(ग) वह पाँच

(घ) वह आदमी

उत्तर: (घ) वह आदमी

प्रश्न:2 'मनुष्य' शब्द के दो पर्याय गद्यांश में से छाँटिएँ।

(क) लड़का, लाला

(ख) मानव, आदमी

(ग) मनुष्य, व्यक्ति

(घ) इन्सान, आदमी

उत्तर: (घ) इन्सान, आदमी

प्रश्न:3 उसकी गिनती शहर के खास लख़पतियों में क्यों आती है?

(क) रुखे और कंजूस व्यवहार की वजह से

(ख) मेहमानों से पैसे वसूलने की वजह से

उत्तर: (क) रुखे और कंजूस व्यवहार की वजह से

प्रश्न:4 सम्पत्ति मिलने पर क्या होता है?

(क) झगड़ा और घृणा समाप्त हो जाती है

(ख) झगड़ा और घृणा और बढ़ जाती है

उत्तर: (ख) झगड़ा और घृणा और बढ़ जाती है

प्रश्न:5 पहले व्यक्ति को उस आदमी के साथ चाय पीने का सौभाग्य कैसे मिला?

(क) घृणा के कारण

(ख) उदारता एवं सहानुभूति के कारण

उत्तर: (क) घृणा के कारण

अपठित गद्यांश 4

बाल्यकाल में मैंने सुना था, 'खेलोगे, कूदोगे होगे ख़राब, पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब।' कुछ लोग आज भी सोचते हैं कि खेलने-कूदने से समय नष्ट होता है। स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए व्यायाम कर लेना और प्रात:भ्रमण कर लेना हीं पर्याप्त है। पर मेरा अपना अनुभव बिलकुल भिन्न है। मैं अपने अनुभव के बल पर यह कह सकता हूँ कि यह विचार ठीक नहीं। खेल-कूद से स्वास्थ्य तो बनता हीं है, साथ-साथ मनुष्य ऐसे गुण भी सीखता है जिनका जीवन में विशेष महत्त्व है।

ये गुण व्यायाम और प्रात:भ्रमण से विकसित नहीं हो सकते। सहयोग से काम करना और खेल को खेल समझकर खेलना, उसमें किसी प्रकार की बेईमानी न करना तथा नियमों का ईमानदारी से पालन करना आदि गुण खेलों के द्वारा अनायास सीखे जा सकते हैं। लोग सफलता न पाने पर साहस छोड़ बैठते हैं और पुन: प्रयास हीं नहीं करते। परंतु अच्छा खिलाड़ी हारने पर भी प्रयास करता रहता है।

ताकि वह आगे चलकर हारी हुई बाज़ी जीत सके। इन बातों से प्रतीत होता है कि खेल के मैदान में केवल स्वास्थ्य नहीं बनता, वरन् मनुष्य बनता है। खिलाड़ी वे बातें सीखता है जो नागरिक जीवन की समस्या को सुलझाने में सहायता देती हैं।

प्रश्न:1 'खेलोगे, कूदोगे होगे खराब' का क्या आशय है?

(क) खेलने कूदने से समय खराब होता है

(ख) विजय मिलने पर अभिमान न करना

उत्तर: (क) खेलने कूदने से समय खराब होता है

प्रश्न:2 खेलने से समय नष्ट नहीं होता हैं। क्यों?

(क) खेलने से सफलता मिलती है

(ख) खेलने से सहयोग एवं धैर्य जैसे गुण आते हैं

उत्तर: (ख) खेलने से सहयोग एवं धैर्य जैसे गुण आते हैं

प्रश्न:3 दिए गए गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(क) जीवन में खेलों का महत्त्व

(ख) खेलना कूदना

उत्तर: (क) जीवन में खेलों का महत्त्व

प्रश्न:4 'बेईमान' शब्द का संज्ञा शब्द लिखिए।

(क) बेईमानदार

(ख) ईमानदार

(ग) ईमानदारी

(घ) बेईमानी

उत्तर: (घ) बेईमानी

प्रश्न:5 व्यायाम के क्या लाभ हैं?

(क) इससे स्वास्थय ठीक रहता है

(ख) इससे साहस न छोड़ना की भावना जागरुक होती है

(ग) इससे नियमपूर्वक कार्य करने की क्षमता बढ़ती है

(घ) इससे सहयोग से कार्य करने की कौशलता बढ़ती है

उत्तर: (क) इससे स्वास्थय ठीक रहता है

अपठित गद्यांश 5

लेकिन जब तक हम उसमें और मौजूदा वक्त में, जहाँ इतनी कशमकश है और हल करने के लिए इतने मसले हैं, एक जीती-जागती कड़ी न कायम कर सकें, तब तक इस ज़िंदगी को हम ज़िंदगी नहीं कह सकते। यह कला कला के लिए एक चीज़ बन जाती है जिसमें कोई उत्साह नहीं, काम करने की उम्मीद नहीं, जो ज़िंदगी का सार नहीं।

इस उत्साह और उमंग के बग़ैर, उम्मीद और ताकत रफ्ता-रफ्ता जाती रहती है। हम ज़िंदगी की एक नीची सतह पर आकर ठहर जाते हैं, यहाँ तक कि चुपके-चुपके मिट जाते हैं। हम गुज़रे ज़माने के हाथों कैदी बनकर रह जाते हैं और उसकी बेबसी का कुछ हिस्सा हममें चिमटकर रह जाता है।

फिर भी, गुज़रा हुआ ज़माना तो हमारे साथ ही रहता है⁻हम जो कुछ हैं, हमारे पास जो कुझ है, वह गुज़रे हुए ज़माने से हीं हासिल हुआ है। हम उसके बनाए हुए हैं और उसी में गर्क होकर जीते हैं। इस बात को न

समझना और यह ख्याल करना कि यह कोई ऐसी चीज़ है जो हमारे भीतर रहती है, मौजूदा ज़माने को न समझना है।

हर एक ज़ोरदार काम ज़िंदगी की गहराईयों से पैदा होता है। अरविंद घोष ने वर्तमान समय के विषय में कहीं पर लिखा है कि यह 'विशुद्ध और अक्षत क्षण, समय और अस्तित्व की वह पैनी छुरे की धार है जो गुज़रे हुए ज़माने को आने वाले ज़माने से जुदा करता है।' आने वाले ज़माने के परदे पर इस अक्षत क्षण का अपनी पूरी विशुद्धता के साथ प्रकट होना, उससे हमारा लगाव होना ओर फौरन उसका बासी और गुज़रा ज़माना बन जाना!

फलसफ़े की नज़र में इनसानी आज़ादी जैसी कोई चीज़ है या नहीं, या जो कुछ है, वह खुद चलने वाला और पहले से निश्चित है⁻मैं नहीं जानता। जान पड़ता है कि बहुत कुछ यकीनी तौर पर ऐसी पिछली घटनाओं के मेलजोल से तय हो पाया है जो आदमी पर बीतती है, अकसर बेबस कर देती है। शोपेनहार कहता है आदमी इच्छा के मुताबिक काम कर सकता है लेकिन काम के मुताबिक इच्छा नहीं कर सकता।

प्रश्न:1 ज़िंदगी को ज़िंदगी कब कहा जा सकता है?

(क) कशमकश में रहकर

(ख) कला के लिए जीकर

(ग) उत्साह और उमंग से जीकर

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (ग) उत्साह और उमंग से जीकर

प्रश्न:2 गुज़रे हुए ज़माने से हमें क्या मिला हुआ है?

(क) मौजूदा ज़माना

(ख) शांति और इत्मिनान

(ग) समाधि जमाना

(घ) गुज़रे ज़माने के कैदी

उत्तर: (क) मौजूदा ज़माना

प्रश्न:3 'गत समय' के लिए लेखक ने क्या शब्द प्रयुक्त किए हैं?

(क) वर्तमान समय

(ख) आने वाला ज़माना

(ग) मौजूदा ज़माना

(घ) गुज़रा ज़माना

उत्तर: (घ) गुज़रा ज़माना

प्रश्न:4 'उम्मीद' और 'आज़ादी' शब्द के हिंदी पर्याय लिखिए।

(क) गर्व, संग्राम

(ख) आशा, समर

(ग) आशा, स्वतंत्रता

(घ) अनुभूति, क्षुधा

उत्तर: (ग) आशा, स्वतंत्रता

प्रश्न:5 उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

(क) ज़माने

(ख) बदलता ज़माना

(ग) वर्तमान समय

(घ) गुज़रा ज़माना

उत्तर: (घ) गुज़रा ज़माना

अपठित गद्यांश 6

चेनम्मा का जन्म 1778 में कित्तूर के काकतीय राजवंश में हुआ था। पिता थुलुप्पा देसाई और माता पद्मावती ने अपनी कन्या का नाम चेनम्मा इसलिए रखा कि वह बहुत रुपवती थी। उसकी पढ़ाई-लिखाई भी राजकुमारों जैसी हीं हुई⁻घुड़सवारी, आखेट, शस्त्र-चालन का प्रशिक्षण, युद्ध-कलाओं का अभ्यास भी जिसमें शामिल था। कन्नड़, मराठी, उर्दू व संस्कृत भाषाएँ भी चेनम्मा को सिखाई गईं।

इसके साहस और बुद्धिमत्ता की ख्याति चारों ओर फैलने लगी, तो कित्तूर के राजा मल्ल सर्ज ने उसका हाथ माँग लिया। मल्ल सर्ज और चेनम्मा के विवाह के बारे में एक रोचक घटना प्रसिद्ध है: एक बार चेनम्मा के

शिकार खेलते हुए एक बाघ को निशाना बनाया। उसी समय उस जंगल में मल्ल सर्ज भी शिकार खेलने आया हुआ था। राजा मल्ल सर्ज ने भी एक बाघ पर निशाना साधा। अपने शिकार का पीछा करते हुए उसने देखा, एक सुंदर युवती मरे बाघ के सिरहाने बैठी है। राजा ने समझा, यह उसी का शिकार है, जबकि वह बाघ चेनम्मा द्वारा मारा गया बाघ था। इसी बात को लेकर दोनों में तकरार हुई और चेनम्मा के रुप, सौंदर्य व बुद्धिमत्ता से प्रभावित हो मल्ल सर्ज ने उसके साथ विवाह किया।

विवाह के बाद रानी चेनम्मा राजकाज में पति का हाथ बँटाने लगी। राजा मल्ल सर्ज धीर, गंभीर, बहादुर, स्वाभिमानी और कला-प्रेमी थे। कित्तूर को संपन्न राज्य बनाने का सपना देख रहे थे कि पूना के पटवर्धन ने उन्हें बंदी बना लिया और बंदी रुप में ही 1816 में उनकी मृत्यु हो गई। मल्ल सर्ज की बड़ी रानी थी रुद्रम्मा और छोटी थी चेनम्मा। चेनम्मा रुपवती और गुणवती होने के कारण राजकाज संभालने के योग्य थी। उसके एकमात्र पुत्र की अकाल मृत्यु हो गई तो चेनम्मा ने शिवलिंग रुद्र सर्ज को अपना पुत्र मान गद्दी पर बिठाया और उसे राजकाज चलाना सिखाया।

प्रश्न:1 गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(क) काकतीय राजवंश

(ख) रानी चेनम्मा

(ग) मल्ल सर्ज की पत्नी

(घ) कित्तूर की बेटी

उत्तर: (ख) रानी चेनम्मा

प्रश्न:2 चेनम्मा की बहादुरी और बुद्धिमता से प्रभावित होकर किस राजा ने विवाह प्रस्ताव रखा?

(क) राजा मल्ल सर्ज

(ख) थुलुप्पा देसाई

(ग) शिवलिंग रुद्र

(घ) पटवर्धन

उत्तर: (क) राजा मल्ल सर्ज

प्रश्न:3 रानी का नाम चेनम्मा क्यों रखा गया?

(क) उनकी बहादुरी पर

(ख) राजा-रानी को यह नाम बहुत पसंद था

(ग) वह सभी भाषा जानती थी

(घ) वह रुपवती थी

उत्तर: (घ) वह रुपवती थी

प्रश्न:4 राजा मल्ल सर्ज को बंदी किसने बनाया था?

(क) रानी रुद्रम्मा

(ख) रानी चेनम्मा

(ग) राजा थुलुप्पा देसाई

(घ) राजा पटवर्धन

उत्तर: (घ) राजा पटवर्धन

प्रश्न:5 'प्रशिक्षण' शब्द में आए उपसर्ग को अलग कीजिए?

(क) पर

(ख) प्र

(ग) प्रई

(घ) परि

उत्तर: (ख) प्र + शिक्षण = प्रशिक्षण

अपठित गद्यांश 7

भीखाजी कामा का नाम भारत की ऐसी महिलाओं में आदर के साथ गिना जाता है जिन्होंने विदेश में रहकर भी वहाँ की जनता का समर्थन भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के लिए प्राप्त किया तथा भारत की स्वाधीनता के लिए विश्व-जनमत तैयार किया।

भीखाजी को बचपन से ही विभिन्न भाषाओं के अध्ययन में विशेष रुचि थी तथा समाज-सेवा के कामों में भाग लेना बहुत भाता था। बीस वर्ष की आयु में इन पर देश के प्रमुख राजनेताओं के भाषणों का प्रभाव पड़ने लगा। शनैःशनैः वे भारतीय स्वाधीनता संग्राम के साथ जुड़ गईं।

बंबई (मुंबई) में प्लेग फैलने पर उन्होंने दीन-दुखियों की खूब सेवा की तथा स्वयं भी प्लेग का शिकार हो गईं। इलाज के लिए इंग्लैंड पहुँचने पर इन्होंने भारत के क्रांतिकारियों के लिए गुड़ियों के पार्सलों में पिस्तौलें भेजीं। देशभक्ति तथा समाज सेवा की भावना इनमें कूट-कूट कर भरी थी। ये लेखनी की भी धनी थीं। ये भारत में ऐसी शासन व्यवस्था चाहती थीं जिसमें अमीर-ग़रीब और ऊँच-नीच का भेदभाव न हो। इनकी वक्तृत्व कला को देखकर लोग दंग रह जाते थे।

भीखाजी अत्यंत निर्भीक थीं। नासिक षड्यंत्र में जब एक देशद्रोही गवाह के बयान से इंग्लैंड में रहने वाले सभी क्रांतिकारी फँस रहे थे, तो भीखाजी ने सारा इल्ज़ाम अपने सिर ले लिया। चौथाई सदी से भी अधिक समय तक इन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। सर्वप्रथम राष्ट्रीय ध्वज का निर्माण कर उसे अंतर्राष्ट्रीय मंच पर फहराने का श्रेय इसी वीरांगना को है।

प्रश्न:1 भीखाजी को क्या भाता था?

(क) समाज सेवा का काम

(ख) लेखन कार्य

(ग) भाषण देना

(घ) अध्ययन-रत रहना

उत्तर: (क) समाज सेवा का काम

प्रश्न:2 भीखाजी ने पिस्तौलें कैसे भेजीं?

(क) एक व्यक्ति के साथ

(ख) आम पार्सल में

(ग) अपनी सहेली के साथ

(घ) गुड़ियों के पार्सल में

उत्तर: (घ) गुड़ियों के पार्सल में

प्रश्न:3 गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।

(क) भीखाजी कामा

(ख) कर्मठ स्वयं-सेविका

(ग) सच्ची देशभक्त

(घ) एक स्वाधीनता सैनानी

उत्तर: (क) भीकाजी कामा

प्रश्न:4 भीखाजी की स्वाधीनता संग्राम में क्या भूमिका रही?

(क) लेखन से लोगों को प्रभावित करना

(ख) विश्व जनमत तैयार करना

उत्तर: (ख) विश्वजनमत तैयार करना

प्रश्न:5 'शनैः-शनैः' व 'कूट-कूट' में कौन सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास

(ख) उपमा

(ग) पुनरुक्ति

(घ) रुपक

उत्तर: (ग) पुनरुक्ति अलंकार

अपठित काव्यांश 1

सम्राट स्वयं प्राणेश, सचिव देवर हैं

देते आकर आशीष हमें मुनविर हैं

धन तुच्छ यहाँ यद्यपि अंसख्य आकर है

पीते पानी मृग-सिंह एक तट पर हैं।

सीता रानी को यहाँ लाभ ही लाया

मेरी कुटिया में राजभवन मनभाया

औरों के हाथों यहाँ नहीं पलती हूँ

अपने पैरों पर खड़ी आपचलती हूँ।

श्रमवारि बिंदु फल स्वास्थ्य शुक्ति फलती हूँ

अपने अंचल से व्यंजन आप झलती हूँ

तनु-लता-सफलता-स्वादु आज ही आया

मेरी कुटिया में राजभवन मनभाया

गुरूजन-परिजन-सब अन्य ध्येय हैं मेरे

औषधियों के गुण विगुण ज्ञेय हैं मेरे

वन-देव-देवियाँ आतिथेय हैं मेरे

प्रिय संग यहाँ सब श्रेय हैं मेरे

मेरे पीछे ध्रुव धर्म स्वयं ही धाया

मेरी कुटिया में राजभवन मन भाया।

प्रश्न-1 सीता को अपनी कुटिया कैसी लगी?

(क) राजभवन

(ख) पिता का घर

(ग) धर्म संगत

(घ) सबसे श्रेष्ठ

सही उत्तर – (क) राजभवन

प्रश्न-2 सीता को अपनी कुटिया राजभवन जैसी क्यों लगी?

(क) स्वयं पर निर्भर थी

(ख) वहाँ की रानी थी

(ग) मृग सिंह एक साथ थे

(घ) मुनिवर आर्शीवाद देते थे

सही उत्तर – (क) स्वयं पर निर्भर थी

प्रश्न-3 सीता के लिए आतिथेय कौन है?

(क) वन देव-देवियां

(ख) किरात भिल्ल

(ग) सभी वनचर

(घ) सभी संगी साथी

सही उत्तर – (क) वन देव-देवियां

प्रश्न-4 श्रमवारि का क्या अर्थ है?

(क) श्रम करना

(ख) परिश्रम

(ग) श्रम से निकला पसीना

(घ) स्वास्थ्य

सही उत्तर – (ग) श्रम से निकला पसीना (श्रम + वारि)

प्रश्न-5 सीता ने अपना ध्येय किसे माना है?

(क) केवल गुरूजन

(ख) गुरूजन-परिजन व अन्य

(ग) केवन परिजन

(घ) इनमें से कोई नहीं

सही उत्तर – (ख) गुरूजन-परिजन व अन्य

अपठित काव्यांश 2

अन्तर भावों को भीषण, पर्वत,

नहीं रोक सकते उठकर।

अन्तर भावों को झंझा झोंके,

नहीं रोक सकते बह कर।।

हों इच्छायें यदि प्रबल, पंथ की

भारी खाई पट जाती

मानव की इच्छाओं से

पाषाणों पर कलिका खिल जाती।।

यह भावी स्वामी दयानन्द,

अन्तर में इच्छाएँ लेकर।

जग बाधा सागर तर जाने,

चल पड़ा स्वयं तन मन दृढ़ कर।।

निस्तब्ध रात्रि में पथ तय करता,

किसी वृक्ष से टकराया।

उस रात उसी की शाखाओं पर

सुखद बसेरा हो आया।।

प्रश्न-1 उपरोक्त पद्यांश किस पर आधारित है?

(क) स्वामी विवेकानन्द

(ख) स्वामी दयानन्द

(ग) स्वामी दयाप्रसाद

(घ) स्वामी दयाराम

सही उत्तर – (ख) स्वामी दयानन्द

प्रश्न-2 यदि मनुष्य सच्चे दिल से चाहे तो क्या हो सकता है?

(क) पत्थरों में फूल खिल जाते हैं

(ख) मनमानी कर सकता है

(ग) किसी को भी तोड़ सकता है

(घ) जहाँ चाहे जा सकता है

सही उत्तर – (क) पत्थरों में फूल खिल जाते हैं

प्रश्न-3 स्वामी दयानन्द कब अपना घर छोड़कर चल दिए?

(क) निस्तब्ध रात में

(ख) अचानक से

(ग) खाते खाते उठ गए

(घ) प्रात: काल में

सही उत्तर – (क) निस्तब्ध रात में

प्रश्न-4 अन्तर के भावों को कौन नहीं रोक सकते हैं?

(क) पानी का दरिया

(ख) भूख प्यास

(ग) भीषण पर्वत

(घ) समुद्र

सही उत्तर – (ग) भीषण पर्वत

प्रश्न-5 'इच्छा' शब्द का विपरीतार्थक शब्द बताइए।

(क) इच्छा रहित

(ख) बिना इच्छा के

(ग) बेइच्छा

(घ) अनिच्छा

सही उत्तर – (घ) अनिच्छा

अपठित काव्यांश 3

ऊँची पर्वत ग्रीवायें थी, उठो व्योम को छूती।

विकसित तरूमाला कैसे, रहती हिम बिना अछूती।।

ऊपर हिम नीचे हिम था, दायें बाएँ हिम छाया।

हिम पर निश्चिन्त मधुप-सा, फिरता जननी का जाया।।

पतले पट थे तन ऊपर, सर-सर-सर वायु बही थी।

पर अन्तर भीतर कोई, अभिलाषा नाच रही थी।।

भीषण सर्दी में बढ़ता, टकराता फिरता पथ-पथ।

इति का कुछ ज्ञात नहीं था, जाना पगडंडी का अथ।।

प्रश्न-1 ऊँची पर्वत श्रेणियों को कौन छूना चाहता था?

(क) पेड़ों की कतार

(ख) फूलों की झाडियाँ

(ग) झरने की कतार

(घ) मेघ श्रृंघलाएँ

सही उत्तर – (क) पेड़ों की कतार

प्रश्न-2 हिम पर्वतों पर मधुप की तरह कौन घूमता फिरता था?

(क) भारतवासी

(ख) एक व्यक्ति

(ग) जननी का जाया

(घ) कोई नहीं

सही उत्तर – (ग) जननी का जाया

प्रश्न-3 उसने किस तरह के वस्त्र पहन रखे थे?

(क) कंबल जैसे

(ख) लिहाफ जैसे

(ग) मोटे मोटे

(घ) पतले पतले

सही उत्तर – (घ) पतले पतले

प्रश्न-4 पहाड़ों पर कैसा मौसम रहता है?

(क) सर्दी

(ख) गर्मी

(ग) बरसात

(घ) सुहावना

सही उत्तर – (क) सर्दी

प्रश्न-5 'इति' शब्द का विलोम शब्द पद्यांश में से छाँटिए।

(क) अन्त

(ख) शुरू

(ग) आरम्भ

(घ) अथ

सही उत्तर – (घ) अथ

अपठित काव्यांश 4

काशी नगरी भारत में

सुखराशि कहाई जाती।

कुछ मुक्ति द्वार बतलाते

संसार स्वर्ग कहलाती

कहते इसमें मर कर नर

कैलाश वास पा जाता।

कुछ कहते इसमें मर कर

वैतरणी से तर जाते।

पौराणिक धर्म केन्द्र है,

कितने विद्वान यहाँ पर।

शंकर बतलाया जाता,

इसका कंकर, कंकर हर।।

प्रश्न-1 काशी नगरी को भारत में क्या कहते हैं?

(क) सुखराशि

(ख) मुक्ति द्वार

(ग) संसार स्वर्ग

(घ) 1,2,3 सभी

सही उत्तर – (घ) 1,2,3 सभी

प्रश्न-2 यदि कोई काशी में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है तो क्या कहा जाता है?

(क) वैतरणी पार करना

(ख) गंगा पार करना

(ग) मुक्ति पा जाना

(घ) स्वर्ग को जाना

सही उत्तर – (क) वैतरणी पार करना

प्रश्न-3 काशी के हर कण को क्या रूप दिया जाता है?

(क) कृष्ण का

(ख) शंकर का

(ग) विष्णु का

(घ) दुर्गा का

सही उत्तर – (ख) शंकर का

प्रश्न-4 इस नगरी में क्या होने से इसे पौराणिक धर्म केन्द्र कहते हैं?

(क) अनेकों विद्वान

(ख) अनेकों ब्राह्मण

(ग) अनेकों पंडित

(घ) अनेकों ग्रन्थ

सही उत्तर – (क) अनेकों विद्वान

प्रश्न-5 'वैतरणी' का शब्दिक अर्थ क्या होता है?

(क) स्वर्ग की नदी

(ख) पवित्र नदी

(ग) संसार रूपी नदी

(घ) गंगा नदी

सही उत्तर – (ग) संसार रूपी नदी

अपठित काव्यांश 5

बिना दवा दर्पन के घरनी स्वरंग चली-आँखें आती भर

देख रेख के बिना दुघमुँही, बिटिया दो दिन बाद गई मर

घर में विधवा रही पतोहू, लक्ष्मी थी, यद्यपि पति घातिन

पकड़ मँगाया को तवाल ने, डूब कुएँ में भरी एक दिन!

खैर पैर की जती, जोरू, नसही एक दूसरी आती,

पर जवान लड़के की सुघकर साँप लोटते फटती छाती

पिछले सुख की स्मृति आँखों में क्षणभर एक चमक है लाती

तुरंत शून्य में गड़ वह चितवन

तीखी नोक सद्दश बन जाती।

प्रश्न-1 उपरोक्त पंद्याश में कवि किसकी व्यथा अथवा दशा का वर्णन कर रहा है?

(क) गरीब परिवार की

(ख) मजदूर की

(ग) किसान की

(घ) स्त्री की

सही उत्तर – (क) गरीब परिवार की

प्रश्न-2 विधवा पतोहू को क्या कहा जाता है?

(क) लक्ष्मी

(ख) पति घातिन

(ग) 1 व 2 दोनों

(घ) कुलटा

सही उत्तर – (ग) 1 व 2 दोनों

प्रश्न-3 कोतवाल ने स्त्री को पकड़ कर बुलवा लिया तो शर्म से स्त्री ने क्या किया?

(क) भाग गई

(ख) कुएँ में डूब मरी

(ग) तालाब में डूब गई

(घ) जलकर मर गई

सही उत्तर – (ख) कुएँ में डूब मरी

प्रश्न-4 गरीब व्यक्ति न चाह कर भी क्या याद करता है?

(क) पिछला सुख

(ख) वेटा

(ग) बहु

(घ) पत्नि

सही उत्तर – (क) पिछला सुख

प्रश्न-5 'घातिन' शब्द से प्रत्यय अलग करो!

(क) तिन

(ख) तइन

(ग) इन

(घ) ईन

सही उत्तर – (ग) इन